5:12-14

समापन टिप्पणियाँ

[12]मैं ने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं विश्वासयोग्य भाई समझता हूँ, संक्षेप में लिखकर तुम्हें समझाया है, और यह गवाही दी है कि परमेश्वर का सच्चा अनुग्रह यही है, इसी में स्थिर रहो। [13]जो बेबीलोन में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, वह और मेरा पुत्र मरकुस तुम्हें नमस्कार कहते हैं। [14]प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो। तुम सब को, जो मसीह में हो, शान्ति मिलती रहे।

आयत 12. ऐसा हो सकता, यद्यपि यह निश्चित नहीं है, कि यह सिलवानुस प्रेरितों के काम की पुस्तक के सीलास के समान ही है। अपने पत्रों में, पौलुस ने सीलास का कोई उल्लेख नहीं किया, परन्तु तीन स्थानों पर सिलवानुस की ओर संकेत किया है (2 कुरिन्थियों 1:19; 1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। निश्चय ही यह वही सहयात्री है जिसका उल्लेख प्रेरितों के काम में किया गया है। जब NIV अनुवादकों ने "सीलास" शब्द का अनुवाद किया, उन्होंने संकेत किया कि उन्होंने इसे एक व्यक्ति के रूप में ले लिया।[1] इसका नाम ही लतीनी में है। रोमी पौराणिक कथाओं में "सिलवानुस" वन देवता था। जब रोमी किसानों ने भूमि साफ़ की और वन क्षेत्र कम कर दिया था, कई बार वे जोते गए खेत के किनारे पर उस देवता के सम्मान में एक छोटी वेदी, इस आशा में बना देते थे कि इस प्रकार में उसके क्षेत्र में अभिग्रहण करने के लिए उसे प्रसन्न कर देंगे। रोमियों का वन के आगे 'ट्रांसलवे-निया' नामक एक क्षेत्र था। यदि सीलास, पौलुस का सहयात्री "सिलवानुस" ही है, यह रोचक है कि एक अच्छे यहूदी को उसके माता-पिता के द्वारा एक रोमी देवता का नाम दिया जाना चाहिए था (प्रेरितों के काम 15:32)। परन्तु, आधुनिक रीति-रिवाज़ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि ऐसा करना ईशनिन्दा नहीं रही होगी। जब एक माता अपनी सन्तान का नाम डायना रखती है, उसकी रोमी देवी में कोई रुचि नहीं है, जिसका यह नाम था। हो सकता है उसे पता भी न हो कि कोई ऐसी देवी भी हुई थी। हो सकता है "सिलवानुस" नाम भोलेपन से भविष्यद्वक्ता की माता के द्वारा रख दिया गया हो जैसे आधुनिक माता के द्वारा डायना नाम रखा गया है। दूसरे, "सिलवानुस" नाम एक गैरयहूदी पिता के द्वारा दिया गया था जिसने एक यहूदी महिला से विवाह किया था। यदि भविष्यद्वक्ता की माता यहूदी थी, वह एक यहूदी रहा होगा। ऐसा अनुमान लगाने का कोई कारण नहीं है कि यह "सिलवानुस" प्रेरितों के काम के सीलास से अलग और कोई नहीं है, क्योंकि उसका एक रोमी देवता का नाम था।

वेन ए. ग्रूडेम ने एक सशक्त टिप्पणी की कि पूर्वसर्ग डिया/डिया का अर्थ है

कि सिलवानुस एक पत्रवाहक था न कि लेखक जिसने पतरस के लिए लिखा। उन्होंने अनेक स्थानों पर संकेत किया जहां प्राचीन लेखकों ने पत्रवाहक की ओर संकेत करने के लिए यह शब्द प्रयोग किया।[2] उनके प्रमाण को रद्द करना कठिन है। परन्तु, कोई पत्र की सर्वोत्तम यूनानी के लिए उसे श्रेय दिए बिना रह नहीं सकता। ग्रूडेम ने यह तर्क दिया कि पतरस एक वन्य मछुआरा था जिसे औपचारिक शिक्षा बहुत कम मिली होगी।[3] सम्भवतः, परन्तु 2 पतरस की यूनानी शैली इस पत्र के स्थान पर बहुत भिन्न है। क्या पतरस ने व्यक्तिगत रूप से दोनों पत्रों को लिखा? यद्यपि पतरस और उसके साथी मछुआरे अत्यधिक साधनों वाले लोग थे, परन्तु वह इस ओर संकेत नहीं करता कि पत्रों के लिए सिखाए गए थे। प्रेरितों के काम 4:13 बताता है कि वे नहीं थे। यदि सिलवानुस पतरस का लेखक नहीं था, तो इस पत्र को किसने लिखा, स्पष्टतः किसी और व्यक्ति ने। ऐसा सुझाव देना अत्यधिक कठिन है कि "सिलवानुस" ही इस पत्र का लेखक और वाहक दोनों था।

प्रेरित ने उस उद्देश्य को पहचान लिया जिसके लिए उसने लिखा था। उसने कहा कि यह प्रो**त्साहित करने और साक्षी देने के लिए एक संक्षेप पत्र है कि यही परमेश्वर का वास्तविक अनुग्रह है**। प्रोत्साहित करना किसी को अडिग बने रहने के लिए आग्रह करना या कार्य करने के मार्ग का आरम्भ करना है। पतरस का प्रोत्साहन सम्पूर्ण पत्र में पाया जा सकता है। वह उन्हें पवित्र बने रहने (1:14, 15), अधीन रहने (2:13, 18; 3:1; 5:5), नम्र रहने (5:6) और अन्य नैतिक और विश्वास से सम्बन्धित व्यवहारों के लिए प्रोत्साहित करता है।

दूसरा शब्द "साक्षी देना" एक विशेष रुचि रखता है। यह एक संयुक्त शब्द ἐπιμαρτυρέω *(इपिमारटुरिओ)* समान शब्द रूप का भाग है जिसे 5:1 में "साक्षी" अनुवादित किया गया है। साक्षी गवाही देने के योग्य हैं। सम्भवतः पतरस का चुनाव उसके पाठकों के लिए एक स्पष्ट स्मरण दिलाना है कि वह प्रभु के साथ रहा है और उसके बारे में एक व्यक्तिगत साक्षी दे सकता है। न केवल 5:1 में अपितु 2:23, 24 में पतरस अपने पाठकों से ऐसे व्यक्ति के रूप में बात करने के योग्य था जो प्रभु के साथ रहा था, जिसने उसे शिक्षा देते हुए सुना और मरते हुए देखा था। उससे अधिक, वह मृत्यु से पुनर्जीवित होने की सामर्थ्य का साक्षी था। न केवल एक भाई के रूप में, परन्तु एक साक्षी के रूप में, पतरस अपने पाठकों को बता सका, "यही परमेश्वर का वास्तविक अनुग्रह है।" नासरत के यीशु में, परमेश्वर ने स्वयं को अपने अनुग्रह की परिपूर्णता में प्रदर्शित किया है। उनसे उनके कभी समाप्त न होने वाले प्रेम को उन लोगों के लिए प्रदर्शित किया, जिनके खाते में मात्र पाप ही थे। यीशु में, उसने न केवल क्षमा और अपने प्रताप में अनन्त जीवन की आशा प्रदान की, परन्तु उसने अपने लोगों को एक अच्छा और सन्तुष्ट जीवन जीने का मार्ग भी दिखाया। वे जो उस पर भरोसा करते हैं, उसने अपने "पहले से ही विद्यमान" राज्य की भरपूरी को प्रदान किया है और उन्होंने "अभी विद्यमान नहीं" अनन्त महिमा को विश्वासयोग्य व्यक्तियों के लिए बचाए रखा है।

प्रेरित ने अपने पाठकों के लिए एक अन्तिम प्रोत्साहन को सम्मिलित किया: **इसमें स्थिर रहो।** "परमेश्वर का वास्तविक अनुग्रह" है जिसमें पतरस मसीहियों को स्थिर रहने का आग्रह करता है। अविश्वासियों से परख, संगी-विश्वासियों के स्वभाव से निरुत्साह और अपने ही भीतर से पाप करने का प्रलोभन विश्वासियों को विचलित कर सकता है। मसीह में पाप का प्रतिरोध करने और "स्थिर रहने" के लिए मसीहियों को अपनी स्वयं की इच्छा शक्ति का आचरण करना है। आत्माएं अनेक हैं जो बपतिस्मा में मसीह को धारण करती, जीवन के आनन्द और आशा को बांटती, और तब अरुचि और निरुत्साह के कारण उसी पुराने चाल-चलन में लौट जाती हैं, जिससे वे बचकर आई थीं (2 पतरस 2:20)।

आयत 13. पतरस ने एक रहस्यमय वाक्य के साथ समाप्त किया। आरम्भिक पद का अक्षरशः अनुवाद इस प्रकार है, "बाबुल आपका अभिनंदन करता है।" शब्द ἡ *(हे)* एक यूनानी अनुच्छेद एक स्त्रीलिंग संज्ञा से पहले आती है। कुछ सन्दर्भों में इसका अर्थ "बाबुल की महिला" हो सकता है, परन्तु यह असम्भव है कि पतरस के साथ एक महिला थी जो उसके पाठकों से भली-भांति परिचित थी कि उसके पहचानने के लिए यह अभिव्यक्ति पर्याप्त थी। "कलीसिया" के लिए यूनानी शब्द (ἐκκλησία, *इक्केलेसिया)* एक स्त्रीलिंग संज्ञा है, और पौलुस कलीसिया को एक दुल्हन या मसीह की पत्नी के रूप में प्रस्तुत करता है। नया नियम के अधिकतर विद्यार्थी विश्वास करते हैं कि पतरस बाबुल की कलीसिया की ओर संकेत कर रहा था। परन्तु NASB **वह जो बाबुल में हैं** अनुवाद करने के द्वारा अंग्रेजी पाठक के लिए एक अन्य अनुवाद की सम्भावना प्रदान करने का प्रयास करती है। KJV अनुवादक जब उन्होंने वाक्य "कलीसिया जो बाबुल में है" का अनुवाद करने में अधिक साहस दिखाया, यद्यपि उन्होंने "कलीसिया जो है" इटैलिक में रखा, यह संकेत कर रहा है कि ये शब्द यूनानी में नहीं हैं। NRSV में "तुम्हारी बहन कलीसिया जो बाबुल में है" लिखा है।

यह सम्भव हो सकता है कि पतरस उस नगर की कलीसिया से शुभकामनाएं भेज रहा है, जहां वह था। यह कहने के पश्चात, पाठक को अभी भी यह निर्णय करना है कि उनका "बाबुल" कहने का क्या अर्थ था। सामान्यतः एक शब्द को उसके मुख्य अर्थ के अनुसार ही लेना चाहिए। हम आशा करते हैं कि यह नाम अक्षरशः बाबुल नगर की ओर ही संकेत करता है जैसे हम "यरूशलेम" को उसी नाम के नगर की ओर संकेत करने की आशा करते हैं। परन्तु कई बार शब्दों को लाक्षणिक रूप में प्रयोग किया जाता है- उनसे कोई विशेष सम्बन्ध होता है जो अक्षरशः अर्थ से परे होता है। मात्र सन्दर्भ ही स्पष्ट कर सकता है कि कब एक शब्द लाक्षणिक या अक्षरशः रूप में प्रयोग किया गया है। यह सुझाव देने के लिए उपयुक्त कारण है कि पतरस ने "बाबुल" शब्द को रोम के लिए लाक्षणिक शब्द के रूप में प्रयोग किया (देखिए, *परिचय,* पृष्ठ 14-16)।

एक बार जब हम ने निर्णय कर लिया कि पतरस एक अलंकार प्रयोग कर रहा था, हमारा पूछना अनिवार्य है, "वह रोम के बारे में क्या कह रहा था जब उसने 'बाबुल' नगर का वर्णन किया?" पुराना नियम में किसी का भी बाबुल से

परिचित होना, यह नाम परमेश्वर के लोगों, परमेश्वर के मन्दिर और परमेश्वर के नगर के विनाश के साथ पर्यायवाची था। बाबुल नगर के द्वारा यरूशलेम को नष्ट करने के प्रति यहूदियों की कड़वाहट प्रतीत होती है जब भजनकार ने लिखा "हे बाबुल तू जो उजड़ने वाली है, क्या ही धन्य वह होगा, जो तुझ से ऐसा ही बर्ताव करेगा जैसा तू ने हम से किया है! क्या ही धन्य वह होगा, जो तेरे बच्चों को पकड़कर, चट्टान पर पटक देगा!" स्पष्टतः पतरस ने रोम के बारे में सोचा, जैसा "बाबुल" परमेश्वर के लोगों के लिए विनाश का साधन रहा था।

दो महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रश्न हैं जो "बाबुल" के साथ रोम का सम्बन्ध बताते हैं। प्रथम, शासकीय रोम था, जो प्रलोभन और पीड़ा के अनुभव में सम्मिलित था, जो पतरस के पाठकों ने अनुभव किया था? जबकि यह असम्भव है कि सम्राट ने मध्य 60 के दशक में मसीहियत के विरुद्ध एक आधिकारिक अध्यादेश जारी किया था जब पतरस ने यह पत्र लिखा, यह अशोचनीय है कि रोमी अधिकारियों ने क्षेत्रों में विश्वासियों के जीवन को दयनीय बनाने के लिए अपने योगदान और आदेश देने के प्रयास किए हों। हो सकता है आधिकारिक रोम ने पतरस के प्रथम पाठकों द्वारा अनुभव किए गए सताव में और योगदान दिया हो जितना आधुनिक अध्ययन बताते हैं।

"बाबुल" के साथ रोम का सम्बन्ध दिखाने वाला दूसरा प्रश्न दर्शाता है कि मसीही रोमी ताकत के सम्बन्ध में स्वयं को कैसे देखते थे। वे उस रीति के बारे में क्या सोचते थे जैसे रोम अपने साम्राज्य को चलाता था? क्या यह हितकारी स्वीकृति थी, या यह अनदेखा प्रभाव था जो रोम को अधर्मी, कामुक बुराई के स्रोत के रूप में देख रहा था? पुराने नियम में न केवल "बाबुल" परमेश्वर के लोगों का विनाशक था, यह नगर कामुकता और मूर्तिपूजा का एक चिह्न भी था। यदि मसीहियों की रोम के लिए नीची सोच थी और यदि उनका दृष्टिकोण उन लोगों के मध्य ज्ञात हो गया था जो नए धर्म का तिरस्कार करते थे, तो सम्भव है कि यह नए धर्म को समाप्त करने के लिए रोम का एक प्रयास भी रहा होगा।

यह सब व्यावहारिक रीति से रोचक है-जब इसे 2:13-17 के साथ जोड़ दिया जाता है, जब विश्वासियों को सरकारी-अधिकारियों के अधीन रहने का आग्रह किया जाता है। 5:13 का "बाबुल" "प्रत्येक मानवीय संस्थान" के अन्तर गत आता है (2:13) चाहे दोनों को सटीकता से समान न माना गया हो। क्या होता यदि पतरस ने कहा होता, "प्रभु के लिए बाबुल के अधीन रहो"? जब पतरस ने रोम को "बाबुल" कहा उसने एक नकारात्मक न्यायदण्ड व्यक्त किया जो उसने उस राज्य के मसीही विश्वास और मसीहियों के आदर्शों पर नैतिक प्रभाव के बारे में अपने पाठकों के साथ साझा किया। वह नकारात्मक न्यायदण्ड सम्भवतः रोमी संसार में मसीही विश्वास के फैलने के आरम्भिक समयों में एक घटक रहा होगा।

पतरस ने यह पत्र अपने पाठकों को "चुने हुए" कहने के द्वारा आरम्भ किया। यहां अन्त में वही शब्द उपयुक्त है। बाबुल की कलीसिया उनके साथ ही **चुनी हुई थी**। पौलुस के समान पतरस ने उन्हीं शब्दों को लागू किया जो औपचारिक रूप

से इस्राएल राष्ट्र से परमेश्वर के नए इस्राएल के लिए संरक्षित थे। विश्वासियों का भाईचारा सम्पूर्ण संसार में जहां कहीं सम्भव हो सके एक दूसरे को **नमस्कार** करता है। एक ही उद्देश्य के लिए जिससे संसार में परमेश्वर की महिमा हो सके, भाषा और जातीय बाधाओं को निरस्त कर दिया जाता है।

वे जो पतरस के साथ थे, यह रोचक है कि वह मात्र **मरकुस** का उल्लेख करता है जो "नमस्कार" कहता है। जबकि "मरकुस" एक सामान्य रोमी नाम था, इसमें बहुत कम सन्देह है कि वह सुसमाचार का लेखक था, जिसमें उनका नाम दिया गया है। आरम्भिक दिनों में, यरूशलेम में मसीही उनकी माता मरियम के घर पर नियमित रूप से मिला करते थे (प्रेरितों के काम 12:12)। प्रथम मिशनरी यात्रा के आरम्भिक भाग में मरकुस पौलुस और उनके चचेरे भाई बरनबास के साथ था, परन्तु इससे पहले की यह समाप्त होती वह लौट आया था (प्रेरितों के काम 13:13)। पौलुस और पतरस की मृत्यु के मात्र कुछ वर्ष पूर्व, यह देखने में रोचक है कि मरकुस दोनों का सहायक था (2 तीमुथियुस 4:11)। पतरस प्रेमपूर्वक उसकी ओर **मेरा पुत्र** के रूप में संकेत करता है।

आयत 14. मसीही समुदाय यीशु के द्वारा कहे गए इन शब्दों के प्रति सतर्क थे: "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। जो सहयोग और लगाव विश्वासी एक-दूसरे के लिए प्रदर्शित करते थे उसने उनके आसपास के अविश्वासी संसार को प्रभावित करना था। पतरस ने अपना पत्र यह कहने के द्वारा समाप्त किया, कि **प्रेम के चुम्बन से एक दूसरे को नमस्कार करो**। पौलुस भी कई बार अपने पत्रों का समापन इसी परामर्श के साथ करता है (रोमियों 16:16; 1 कुरिन्थियों 16:20; 2 कुरिन्थयों 13:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:26)।

वचन का अनुवाद आधुनिक पाठकों को मात्र यह निर्धारण करने के लिए सम्मिलित नहीं करता कि इन प्राचीन लेखों का अर्थ उनके मूल ऐतिहासिक और साहित्यिक परिस्थिति में क्या अर्थ था, अपितु इसमें भी कि यह शताब्दियों को किस प्रकार जोड़ता और शब्दों को आधुनिक जीवन में लागू करता है। पतरस और पौलुस ने अपने पाठकों को "आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार" करने का आदेश दिया था। कुछ मसीही इसे मसीही जीवन के लिए एक अक्षरशः आवश्यकता मान लेते हैं, यद्यपि यह आदेश "पश्चाताप करो और पापों की क्षमा के लिए ... बपतिस्मा लो" के समान स्पष्ट है (प्रेरितों के काम 2:38)। उस आदेश को उन सामाजिक रीति-रिवाज़ों की याचना करने के द्वारा रद्द किया जाना सामान्य है, जो प्रथम शताब्दी के सामुदायिक जीवन में नियन्त्रण रखते थे। कुछ लोग विरोध करते हैं कि यदि कुछ अन्य रीति-रिवाज़ सामान्य शुभकामनाएं, जैसे कि दिल से हाथ मिलाना, को उसे "पवित्र चुम्बन" के स्थान पर कर देना चाहिए। महत्वपूर्ण बात, तर्क आगे बढ़ते हैं, हार्दिक शुभकामनाएं है।

यह तर्क करना उचित है, परन्तु यह एक समस्या को उत्पन्न करता है। एक बार जब सिद्धान्त को अपना लिया गया कि एक सामाजिक रीति-रिवाज़ जो नए नियम के मसीहियों की आचरण से भिन्न है, हो सकता है जो उन्हें दिए गए

आदेश का प्रति स्थापन हो, उसे किस सीमा तक लागू किया जाता है? यह प्रश्न जटिल है और इसकी यहां पूर्ण रूप से चर्चा नहीं की जा सकती। परन्तु, यह स्पष्ट है कि बाइबल का प्रत्येक आदेश आधुनिक मसीही जीवन को समझे बिना आगे ले जाया या लागू नहीं किया जा सकता। बाइबल के कुछ आदेश सार्वभौमिक हैं, और उनका सामाजिक सन्दर्भ से बहुत कम लेना-देना है, जिसमें वे प्रदान किए गए थे। अन्य आदेश संस्कृति से घनिष्ठता से सम्बन्धित हैं, जिसमें यह उन्हें प्रदान किया गया था। कुछ आदेशों के अधीन एक सिद्धान्त हैं जो कुछ विशेष रीति-रिवाजों में पाए जाते हैं। वह विशेष रीति-रिवाज़ भिन्न हो सकते हैं। हाथ मिलाना और एक "पवित्र चुम्बन" विश्वासियों के एक-दूसरे के प्रति सम्मान और लगाव को प्रकट कर सकता है।

प्रेरित के अन्तिम शब्द एक अस्वाभाविक आशीष वचन हैं। **तुम सब को जो मसीह में हो शान्ति मिलती रहे**, उसने लिखा। पतरस और उसके पाठकों के लिए अधिकतम मूल्य यह था कि वे "मसीह में" बने रहें। "मसीह में" बना रहना उसके लोगों के समुदाय में बने रहना है; यह उसकी कलीसिया का एक सदस्य होना है। इसे छुटकारा पाया होना है, मेमने के रक्त के द्वारा व्यक्ति के पापों को हटा दिया जाना है। वे लोग जिन्होंने उनकी आशा और उनके विश्वास में साझेदारी की थी, पतरस उस व्यक्ति के पड़ोसी के साथ "शान्ति," भलाई, अच्छा स्वास्थ्य और तालमेल की इच्छा करता है। वे और वह चाहे किसी भी कष्ट से निकल कर आए हों, जो संसार ने उन्हें दिया था, वे मसीह के प्रताप के प्रकट होने पर आराम प्राप्त करेंगे।

समाप्ति नोट्स

[1]NIV बाइबल के चरित्रों के लिए एक ही वर्तनी का प्रयोग करती है-जब तक भिन्नता का दिखाने का कोई सान्दर्भिक कारण न हो। इसलिए इब्रानी से लिप्यंतरण किए गए नाम और यूनानी से लिप्यंतरण किए गए नामों की वर्तनी एक समान ही होगी। जिन नामों में भिन्नता है, उदाहरण के लिए कैफ़ा, पतरस, शमौन के लिए प्रायः एक ही नाम रखा जाएगा जिससे अंग्रेजी पाठक उन्हें सरलता से पहचान सके। [2]वेन ए. ग्रूडेम, *दि फर्स्ट इपिस्टिल ऑफ पीटरः एन इंटरोडक्शन एण्ड कमैंट्री,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, वॉल्यूम 17 (ग्रैंड रेपिडस, मिशी.: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988), 23-24. [3]पूर्वोक्त, 25-31.